

bedrängend, peinigend 3, 1685.

प्रताम् (von तम् mit प्र), nom. °तान् Schol. zu P. 6, 4, 15. 8, 2, 64. प्र-
ताम् (eben प्रतान्) indecl. गापा स्वरादि zu P. 1, 1, 37.

प्रताम् (प्र+ताम्) adj. überausroth: चित्ताज्ञागर्णप्रताम्नयन Çāk. 133.

प्रतार (von 1. तर् mit प्र) m. 1) das Ueberschiffen, Hinüberfahren
über (gen.): समुद्रस्य R. 1, 3, 33. प्रवोदुप° MBh. 3, 16297. Vgl. गोप्रतार.
— 2) Betrug Vop. 23, 52.

प्रतार्क (vom caus. von 1. तर् mit प्र) adj. subst. hintergehend, be-
trügend, Betrüger: स्वप्° Spr. 3328. यो यस्य प्रतार्कः स तस्याध्यापकः
ÇKDr. Verz. d. Oxf. H. 90, 6, 7 v. u.

प्रतारण (wie eben) n. 1) = प्रतरण (dem Versmaass zu Liebe) das
Hinüberfahren über (gen.): समुद्रस्य R. GORR. 1, 3, 28. सेतुना तेन तत्रै-
च्छकर्तुं सो ऽम्भःप्रतारणम् Rāśa-Tar. 1, 157. 4, 191. — 2) das Hinter-
tergehen, Betriegen, Betrug H. 379. HALĀJ. 4, 63. °णा f. dass.: यदीच्छ-
सि वशीकर्तुं जगदेकेन कर्मणा । उपास्यतां कलौ कल्पलतादेवी प्रतार-
णा ॥ UDBHĀṬA im ÇKDr.; vgl. Spr. 2373. — Vgl. u. प्रतरण.

प्रतारणीय (wie eben) adj. zu hintergehen, zu betrügen Schol. zu KĀTJ.
Çr. 976, 3 v. u.

1. प्रति praep. Nīr. 1, 3. गापा प्रादि zu P. 1, 4, 58. Vop. 1, 8. mit acc.
und ablat., sowohl vorangehend (seltener) als nachfolgend. 1) gegen,
nach, zu (auf die Frage wohin, nach welcher Richtung hin, zu wem;
लक्षणो, अभिमुख्ये, चिह्ने P. 1, 4, 90. AK. 3, 4, 22, 6. H. an. 7, 23. MED.
avj. 23. fg.). a) mit nachfolgendem acc.: प्रत्यगारमिवायासी (so ist mit
der Bomb. Ausg. zu lesen) — धेनुः R. 2, 40, 42. प्रति दिवं ययुः KUMĀRAS.
2, 62. ययावजः प्रत्यरिस्मैयमेव RAGH. 7, 52. महिमा — अतिप्रपेद प्रति तां
म्मरार्दिताम् NAIŠH. 1, 41. प्रत्यग्निं प्रति सूर्यं च प्रति सेमोदकद्विजान् ।
प्रति गो प्रति वारं च प्रज्ञा नश्यति मेरुतः ॥ M. 4, 52. JĀGĒ. 1, 134. MBh. 13,
5029. 3, 12437. 4, 1462. प्रत्यनिलं विचेरुः KUMĀRAS. 3, 31. GĪT. 1, 1. प्रति शुक्रं
प्रति बुधं प्रत्यङ्गारकमेव च । अपि शक्रसमो राजा कृतसैन्यो निवर्तते ॥ CIL.
beim Schol. zu KUMĀRAS. 3, 43. — b) mit vorangehendem acc.: यदा तु यान-
मातिष्ठेदरिराष्ट्रं प्रति M. 7, 181. गमिष्यामि — नमः प्रति Hip. 3, 6. प्रस्थि-
ता सा — पार्थस्य भवनं प्रति INDR. 3, 5. जगाम निषधान्प्रति N. 26, 1.
मर्वे भवतो गच्छन्तु नदीं भागोरथीं प्रति MBh. 15, 861. R. 1, 33, 15. विस-
सर्ज ततो गङ्गा विन्दुसरः प्रति 44, 13. 77, 6. 2, 53, 1. Daç. 2, 35. ITIH. bei
SĀJ. zu RV. 1, 125, 1. RAGH. 1, 75. Spr. 343. Rāśa-Tar. 4, 469. KATHĀS. 39,
171. VID. 324. PĀNĒAT. 36, 3. 95, 25. DHŪRTAS. 81, 5. PRAB. 77, 17. तौ द्यपती
स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामास RAGH. 2, 70. प्रवेशितायां सीतायां ल-
ङ्का प्रति R. 3, 63, 1. वर्षणामृतपुक्तेन ववर्षयोधनं प्रति auf das Schlacht-
feld 6, 105, 18. वृत्तं प्रति विद्योतते विद्युत् P. 1, 4, 90. Sch. तदा यायाद्रिपुं
प्रति gegen den Feind M. 7, 171. AK. 2, 8, 2, 42. 64. H. 791. प्रडुनुवुस्तं
प्रति राजसेन्द्रम् R. 6, 36, 17. महिक्तीनां विषं गच्छेत्कदाचित्स्वजनं प्रति
N. 10, 11. MBh. 1, 5248. KATHĀS. 30, 35. VID. 185. 221. सा च चित्तेप द-
त्तेन पुष्पमादाय तं प्रति KATHĀS. 7, 64. शब्दं प्रति nach der Richtung hin,
von wo der Laut gekommen war, Daç. 1, 22. सख्यौ प्रति (als scenische
Bemerkung) zu den beiden Freundinnen (sc. gewandt, sprechend) Çāk.
33, 19. 49, 8. 70, 4. DHŪRTAS. 90, 17. PRAB. 33, 18. — c) am Anf. eines
adv. comp. P. 2, 1, 14. प्रत्यग्निं gegen das Feuer P. 6, 2, 33. Sch. — 2)
gegen so v. a. vor (schützen), mit dem acc.: अग्ने नि पाहि नृत्वं प्रति

ॐ देव रीषतः RV. 8, 44, 11. — 3) gegen, gegenüber von; mit dem acc.:
अरैजेतो रोदसी प्रति प्रियं यज्ञतं जनुषामवः angestichts, vor RV. 1, 151, 1.
गुरुं प्रति नतिः Spr. 2279. — 4) gegen (in der Vergleichung) P. 1, 4, 92.
AK. H. an. MED. HALĀJ. 3, 95. a) mit dem acc.: इन्द्रं न मुक्ता पृथिवी
चन प्रति RV. 1, 53, 1. 6, 28, 5. 10, 119, 7. तं मुक्ताणि प्रति du bist Tau-
senden gewachsen 2, 1, 8. 8, 53, 2. ÇAT. Br. 3, 4, 2, 18. 14, 8, 25, 8. अर्धमिद-
स्य प्रति रोदसी उभे seine Hälfte kommt beiden Welten gleich RV. 6, 30,
1. TS. 5, 4, 8, 3. तयैतहूर्जा सर्वान्वनस्पतीन्प्रति पच्यते (der Udumbara)
reift trotz allen andern Bäumen d. h. mehr als sie alle (nämlich drei Mal
im Jahre) ÇAT. Br. 6, 6, 2, 3. न च शक्तस्वमिमं प्रति im Vergleich zu die-
sem KATHĀS. 45, 400. Hierher gehören auch die u. 1. अस्मि mit प्रति an-
geführten Stellen. — b) mit dem ablat. oder der adv. Form auf तम् P.
2, 3, 11. 5, 4, 44. प्रद्युम्नः कृष्णात् (कृष्णतः) प्रति Pradjumna ist gleich
Kṛṣṇa, ist eben so mächtig wie er Schol. zu P. 1, 4, 92. 2, 3, 11. 5,
4, 44. Vop. 3, 21. संयामे या नारायणतः प्रति BHĀṬT. 8, 89. — 5) ge-
gen so v. a. in der Richtung von, in der Gegend von, an, bei; zur
Zeit von, um; mit dem acc.: उदीर्य प्रति मा सूनताः RV. 1, 48, 2. पृष्ठं
प्रति संगृह्य TS. 2, 1, 5, 1. यूपं प्रति AIT. Br. 2, 11. उरः प्रति पृष्ठयः ÇAT.
Br. 8, 6, 2, 7. एतत्प्रति वा अमुंराणां यज्ञो व्यच्छिद्यत an diesem Punkte
TS. 1, 7, 1, 5. 5, 5, 2, 4. मध्ये प्रति राष्ट्रस्य ÇAT. Br. 13, 5, 4, 24. 3, 7, 1, 13.
4, 6, 8, 5. 8, 2, 4, 19. सर्वाणि कृ वा इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यत आ-
काशं प्रत्यस्तं यन्ति im Aether KĀND. Up. 1, 9, 1. कार्पचवं प्रति in der
Gegend von K. KĀTJ. Çr. 24, 6, 10. समसेदुस्ततो गङ्गा प्रङ्गवेरपुरं प्रति
R. 2, 83, 19. (गर्भम्) उत्समसं यथाकालं स्थूलकेशाश्रमं प्रति in der Einstie-
delei MBh. 1, 944. 3005. प्रच्छाद्य पृथिवीं तस्युः सर्वमयोधनं प्रति auf
dem Schlachtfelde 3, 15745. हिंकारं प्रति bei LĀJ. 2, 10, 15. 16. 4, 10,
26. 8, 1, 22. यज्ञं यज्ञं प्रति bei jedem Opfer TS. 1, 6, 5, 1. एकमप्याशयेद्विप्रं
पित्र्यं पाञ्चयज्ञिकं । न चैवात्राशयेत्किंचिद्वैदेवं प्रति द्विजम् ॥ M. 3, 83.
प्रति देशामुषासम् RV. 4, 12, 2. फाल्गुनं वाद्य चैत्रं वा मासौ प्रति M. 7,
182. आदित्यस्योदयं प्रति MBh. 4, 1482. R. 6, 73, 8. 111, 6. SUPR. 2, 376,
20. KĀND. Up. 3, 19, 3. पूर्वी संध्यां प्रति MBh. 9, 411. चिरं प्रति lange
Zeit hindurch, seit lange MBh. 3, 3469. प्रति वस्तौः (als indecl. zu be-
trachten) bei Tagesunbruch RV. 2, 39, 3. 10, 189, 3. — 6) auf den Antheil
von, für, zu Gunsten von; mit dem acc. (भागो) P. 1, 4, 90. Vop. 3, 7. H.
an. MED. यदत्र मो प्रति स्यात् P., Sch. हरं प्रति (अभवत्) क्लृप्तकल्म्
Vop. तावदप्यपरित्याज्यं भूमेनः पाण्डवान्प्रति MBh. 3, 2312 = 4258. —
7) für, zum Ersatz von P. 1, 4, 92. H. an. MED. mit dem ablat. P. 2,
3, 11. तिलेभ्यः प्रति यच्छति माषान् Schol. zu P. 1, 4, 92. 2, 3, 11. भक्तेः
प्रत्यमृतं शोभोः Vop. 3, 21. उन्नाणं पक्वां सह्योदनेन अस्मात्कपोतात्प्र-
ति ते नयन्तु MBh. 3, 13287. — 8) in Beziehung auf, in Betreff von
(लक्षणो, चिह्ने und इत्यभूताख्याने P. 1, 4, 90. Vop. AK. H. an. MED.);
mit dem acc.: मेदिन्यां कृतवान्देवः प्रति नेममिवाचलम् wegen des
Schwankens, damit sie nicht schwanke HARIV. 12396. इममेव प्रति nur
in Beziehung auf diesen AIT. Br. 8, 7. ÇAT. Br. 1, 1, 2, 7. यो तत्प्रति
देवतां मन्येत 12, 6, 1, 2. M. 8, 157. 277. सीमां प्रति समुत्पन्ने विवादो
245. 9, 16. 31. 55. तत्रस्यातिप्रवृद्धस्य ब्राह्मणान्प्रति 320. 10, 77. 78.
12, 84. N. 1, 16. 2, 1. 6. 5, 15. 8, 2. SĀV. 4, 18. 7, 5. MBh. 3, 2803. R.
1, 3, 35. 20, 22. 43, 10. 46, 15. शङ्कितो गौतमं प्रति 48, 23. 2, 29, 2. 15. 6,